मेहर धनी की बरस रही,बूंदें अर्श वालों ने लई
इस नींद निगोड़ी को छोड़ो,आई जागने की घड़ी
1--खातिर रूहों की आयें है वो
जाम अर्श का लायें है वो
माया का जीव न पी सके
पिये वो जो रूह अर्श की होए
जिनकी निसबत है न्यामत मिली

2--जिनको सुख है अर्श का यहां
उनके धनी बड़े मेहरबां
भर भर प्याले पिलाते हैं वो
ऐसा सुख भी न मिलता कहां
टूटी त्रैगुन की हथकड़ी

3--जागनी का ब्रह्मांड है ये
सतगुरू बन के जगा ही रहे
आई कयामत कायमी का दिन
मुर्दे कब्रों से उठा ही रहे
धाम चलने की आई घड़ी

Nijanand App